"1981" ~~प्रश्न~~ "भक्तिकाल" (5)

प्रश्न :— कृष्ण काव्य का उद्भव एवं विकास —

उत्तर :— भारतीय वाङ्मय में राम और कृष्ण अनेक ग्रंथों का उपजीव्य रहे हैं। कृष्ण का उदय एवं विकास भारतीय जनसंस्कृति के अनेक स्रोतों से हुआ वैदिक, लौकिक, भक्ति शृंगार, इतिहास, पुराण, साहित्य, लोकगीत आदि अनेक धाराओं से कृष्ण और कृष्ण आख्यानक का सम्बन्ध है। प्राचीन काल से कृष्ण के दोनों रूप लौकिक एवं अलौकिक रूप उजागर होता रहा है, श्रीमद् भागवत गीता, हरिवंश पुराण, नारद पंचरात्र आदि धार्मिक ग्रन्थों में कृष्ण के अवतारी रूप का वर्णन हुआ है भास के नाटकों, शिशुपाल वध आदि में कृष्ण का जीवन एवं कार्यों का वर्णन है।

कृष्ण काव्य की लोकप्रियता चरम उत्कर्ष पर थी, इसी कारण लोक जीवन प्रत्येक नायक कन्हैया तथा प्रत्येक नायिका राधा एवं गोपी बन गयी।

कुछ विद्वानों की मान्यता है कि कृष्ण का लौकिक रूप रीतिकाल में ही लोक जीवन तथा काव्य में प्रचलित हुआ परन्तु प्राकृत के राधा सप्तशती में कृष्ण के रसिक रूप की अवतारणा हुई है।

कृष्ण काव्य परम्परा संस्कृत प्राकृत से होती हुई अपभ्रंश में आयी, पुष्पदन्त ने 'महापुराण' कृष्ण का विस्तृत चित्रण किया है गोपियों की प्रेम विह्वलता श्रीमद् भागवत जैसी मार्मिक है जयदेव के 'गीत गोविन्द' से दो सौ वर्ष पहले भारतीय लोक जीवन में कृष्ण के लौकिक एवं अलौकिक दोनों रूपों का मिश्रण था।

सूर के पूर्व हिन्दी कृष्ण काव्य परम्परा :—

हिन्दी में कृष्ण काव्य की परम्परा सूरदास आदि अष्टछाप के कवियों से लगभग दो सौ वर्ष पूर्व 14 वीं शताब्दी से प्रचलित हो चुकी थी। हिन्दी की सभी उपभाषाओं मैथिली, ब्रज, अवधी आदि में कृष्ण काव्य रचा जाने लगा था। विद्वानों में यह भ्रान्ति सी फैली हुई है कि ब्रजभाषा में सूरदास ही इसके प्रवर्तक हैं विद्यापति ने मैथिली में कृष्ण काव्य का ऐसा मधुर साहित्यिक रूप प्रस्तुत किया जो सूरदास आदि के लिए अनुकरणीय बनी। मैथिली कृष्ण-काव्य परम्परा भी समृद्ध है।

ब्रजभाषा में 'प्रद्युम्न-चरित' (रचनाकाल 1354 ई०) का उपलब्ध है जो एक जैन कवि द्वारा रचित है। विष्णुदास ने (1435 ई०) में 'रुक्मिणी मंगल' 'स्नेह लीला' तथा 'महाभारत कथा' नामक काव्यों की रचना की।

हिन्दी भ्रमरगीत काव्य की परम्परा विष्णुदास ने अपनी 'स्नेह लीला' में आरम्भ कर दी है।

हिन्दी कृष्ण काव्य को उत्कर्ष प्रदान करने वाले प्रमुख सम्प्रदाय है- वल्लभ सम्प्रदाय, गौड़ी सम्प्रदाय, राधा वल्लभी सम्प्रदाय और हरिदासी सम्प्रदाय।

वल्लभाचार्य ने कृष्ण काव्य के प्रणयन में महान योगदान दिया। उन्होंने सूरदास आदि कवियों को लीलागान की प्रेरणा दी। सूरदास के काव्य में कृष्ण काव्य का परमोत्कर्ष रूप मिलता है। —— सूरदास ने अपने 'सूरसागर' में कृष्ण के बाल रूप एवं यौवन रूप का वर्णन अत्यधिक सफलता से किया है। वात्सल्य वर्णन के क्षेत्र में सूर का जो स्वाभाविकता है जिसे आधुनिक भाषा में मनोवैज्ञानिक कहते हैं बालक कृष्ण में एक सनातन नर-शिशु प्रतिबिम्बित हो उठा है। बालक की प्रकृति कैसी होती है- वह कैसे सोचता है। क्या खाता है उसमें ईर्ष्या भाव कितना है। इन सब का उत्तम निदर्शन सूरदास में हुआ है। वात्सल्य वर्णन के क्षेत्र में हिन्दी में ही नहीं, भारत के अन्य भाषाओं में ही नहीं विश्व के किसी भी क्षेत्र में सूर का जोड़ा अभी पैदा नहीं हुआ है।

सूर का भ्रमरगीत कृष्ण गोपियों विशेषतः राधा के यौवन प्रवृत्तियों का विचार वर्णन है। भ्रमरगीत एक प्रतीकात्मक रचना है, कृष्ण ऊपर-ऊपर से नायक है प्रेमी है तह में जाने पर परब्रह्म परमात्मा के प्रतीक है। गोपियां ऊपर-ऊपर से नायिका है प्रेमिका है तह में जाने पर जीवात्मा की प्रतीक है। उद्धव उस ज्ञान गर्व के प्रतीक है जिन्हें मिटा कर ही परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है। सूरकाव्य में जो सहृदयता, वाकविदग्धता, भावुकता, मर्मस्पर्शिता है वह अन्य दुर्लभ है। सूरदास का भ्रमरगीत, विरह, व्यंग्य एवं विनोद की त्रिवेणी है। ग्रियर्सन ने उसे "विनष्ट यौवन का पागल संगीत कहा है।" ——

सूर के भ्रमरगीत, निर्गुण पर सगुण की, भक्तिवादपर ...

हिन्दी साहित्य में कृष्ण काव्य धारा के मुख्य अधिष्ठाता सूरदास हैं कृष्ण काव्य में लीलागान की जो परम्परा है उसमें कवियों की हृदय की सरसता एवं प्रेम उमड़ पड़ता है।

राम के अनन्य भक्त तुलसी दास ने भी कृष्ण की मधुर लीला गान करने का लोभ संवरण नहीं कर सके।

## वल्लभाचार्य की देन :—

ब्रजभाषा में कृष्ण काव्य की रचना का प्रधान श्रेय श्री वल्लभाचार्य को है। जिनके द्वारा प्रचारित पुष्टिमार्ग में दीक्षित होकर सूरदास आदि अष्टछाप के कवियों ने उत्कृष्ट कृष्ण काव्य की रचना की।

## अष्टछाप :—

वल्लभाचार्य का गोलोकवास (वि० सं० १५८६) में हुआ। उनके पश्चात् उनके ज्येष्ठ पुत्र गोपीनाथ आचार्य हुए उन्होंने भी अपना आवित कृष्णभक्ति का प्रचार किया। उनके बाद लगभग वि० सं० १५८६ में वल्लभाचार्य के द्वितीय पुत्र आचार्य विट्ठल नाथ गद्दी पर बैठे। उन्होंने सम्प्रदाय के वैभव को खूब बढ़ाया सेवा-व्यवस्था की उन्नति के साथ साथ गोस्वामी, लेखक कवियों, संगीतज्ञों, चित्रकारों तथा अन्य कलाकारों का भी संगठन किया। अपने पिता के चार शिष्यों, सूरदास, परमानन्द दास कुंभन दास, और कृष्णदास के साथ अपने चार शिष्यों — चतुर्भुज दास, नन्ददास, गोविन्दस्वामी और छीत स्वामी को मिलाकर उन्होंने अष्टछाप की स्थापना की। इन अष्टछाप के भक्त कवियों ने अपनी कविता गंगा की रसधारा से इस सम्प्रदाय को रससिक्त कर दिया। कृष्ण भक्ति काव्य को सूरदास नन्ददास, परमानन्द दास की सर्वाधिक आकुल्य देन है।

कुंभनदास — इनका 'संतन कहा सीकरी सो काम' इनकी संसार से विरक्ति का द्योतक है. भक्ति कवि होने के साथ उच्च कोटि के गायक थे। इनकी कविता बड़ी भावमयी एवं रस भरी है।

## परमानन्ददास :—

इनका सूर सागर की भाँति परमानन्द-सागर प्रसिद्ध है और सूर की तरह इन्होंने भी वात्सल्य की रस की सजीव धारा बहायी है भक्ति की विह्वलता भी अलंकृत रूप में है।

कृष्णदास :-

इनकी कविता सूरदास एवं नन्ददास के बाद 'अष्टछाप' में सर्वोत्कृष्ट मानी जाती है उन्होंने श्री कृष्ण के विशुद्ध श्रृंगार का गेय पदों में बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है।

नन्ददास :-

'अष्टछाप' के कवियों में सूरदास के बाद इन्हीं का वैशिष्ट्य है इनके दो ग्रंथ 'रास पंचाध्यायी' और भंवरगीत बहुत प्रसिद्ध है। काव्य कला की दृष्टि से इनका काव्य अत्याधिक महत्वपूर्ण है 'और कवि गढ़िया नन्द दास जड़िया' की कहावत लोक में प्रचलित है इसी तरह छीतस्वामी, गोविन्द स्वामी, चतुर्भुज दास ने भी कृष्ण काव्य को आगे बढ़ाया। अष्टछाप के कवियों में भक्तिकाव्य एवं संगीत की त्रिवेणी है। भक्ति धारा की प्रसिद्ध कवयित्री मीराबाई के गीतों का कृष्ण भक्ति में विशेष स्थान है, मीरा के गीतों में अपूर्व भाव विह्वलता और आत्म समर्पण का भाव है, मीरा के प्रेम निवेदन और विरह व्याकुलता की अभिव्यक्ति अपनी सानी नहीं रखती।

इसके उपरान्त विभिन्न सम्प्रदायों के भक्ति कवि दृष्टिगत होते हैं।

कृष्ण काव्य धारा में नरोत्तम दास का 'सुदामा चरित' अपनी सरस उक्तियों एवं प्रसाद गुण से पूरित होने के कारण बहुत प्रसिद्ध है ये ब्रजभाषा के प्रसिद्ध एवं लोक प्रिय कवि हैं।

रसखान का नाम कृष्ण भक्ति कवियों में विख्यात है इनकी दो पुस्तकें 'सुजान रसखान' और प्रेम वाटिका प्राप्त हुई हैं रसखान में भक्त हृदय की भावुकता, प्रेमासक्ति की अनन्यता अपूर्व विदग्धता के दर्शन होते हैं।

सम्पूर्ण रीति काव्य में कृष्ण काव्य की धारा श्रृंगार से ओत-प्रोत होकर चलती रही 'आगे के सुकवि रीझिहैं तो कविताई न तु राधा कृष्ण सुमिरन को बहानो है।

आधुनिक काल में भारतेन्दु जी ने राधा कृष्ण पर श्रृंगारिक सवैये लिखे हैं। हरिऔध जी का 'प्रियप्रवास' अपनी आधुनिक दृष्टि से सम्बन्धित होकर हिन्दी पाठकों के समक्ष आया।

जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' ने 'उद्धव शतक' लिखा। गुप्त जी ने 'द्वापर' की रचना की। 'महाभारत' का प्रसंग लेकर अनेक कवियों ने कृष्ण का नाम प्रसंगरूप में लिया जैसे दिनकर के 'रश्मिरथी' में।

आधुनिक काल में भी कृष्ण काव्य की धारा प्रवाहित है हाँ उसकी प्रेरणा का स्वरूप भिन्न है हिन्दी साहित्य में यदि एक विषय पर सबसे अधिक काव्य रचा गया है तो वे कृष्ण ही हैं भविष्य भी लिखता रहेगा।